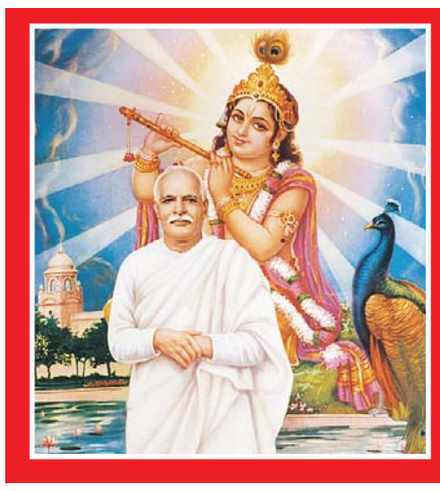

# शिव आमंत्रण

वर्ष: 01 अंक: 02

विशेष सेवाओं हेतु

*बाबा का ज्ञान बिल्कुल नया है*
**राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी,** अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, ... पेज 2 पर

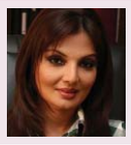

*यहां बताया जा रहा ज्ञान परमात्मा का है*
**दीपशिखा नागपाल,** फिल्म अभिनेत्री, मुम्बई... पेज 3 पर

*जैसी अवस्था वैसी व्यवस्था*
**... पेज 3 पर**

*ब्रह्माकुमारीज़ से मेरी जिंदगी बदल गई ...* **सुरेश ओबेराय,** फिल्म अभिनेता, मुम्बई.. पेज 4 पर

*नैतिक मूल्यों को पुन: स्थापित कर रही ब्रह्माकुमारीज़...*
**लालकृष्ण आडवानी,** वरिष्ठ भाजपा नेता, दिल्ली... पेज 4 पर

*परमात्मा के निर्देशन में बन रही नई दुनिया*
.. पेज 4 पर


# नई दुनिया के आगमन की तैयारी

पूरा सृष्टि चर्क चार युगों में बंटा हुआ है। सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। समय का चक्र अविरल गति से घूमता रहता है। इसे कोई भी प्रभावित नहीं कर सकता। चार युगों में प्रकृति प्रदत्त नियमानुसार दो युग तक स्वर्ग और दो युगों तक नर्क होता है। आज दुनिया के हालात बताने के लिए काफी है कि यह पुरानी दुनिया के परिवर्तन का वक्त है। पूरे वैश्विक जगत के लिए यह खुशखबरी है कि वर्तमान समय नई दुनिया के आगमन का समय है। बस कुछ ही समय के बाद नई दुनिया आ रही है। कैसी होगी नई दुनिया और कहां होंगे हम! ... प्रस्तुत है नए युग की स्थापना का विश्लेषण।

हम एक ऐसी दुनिया में रहते है जहां सुख, दु:ख, मान-अपमान, स्वर्ग-नर्क, नया पुराना दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू है। यह परमात्मा और प्रकृति के नियम में शाश्वत सत्य हैं। धर्म, अधर्म, पाप, पुण्य और सत्य-असत्य में ही हमेशा से द्वन्द्व रहा है। जहां सत्य, धर्म और पुण्य श्रेष्ठ दुनिया और श्रेष्ठ मनुष्य के मापदंड है। वहीं अधर्म, असत्य और पाप निकृष्ट मानव और आसुरी दुनिया के लक्षण है। दुनिया में जितने भी लोग है उनकी एक सर्वोपरि कल्पना मन में रहती है कि वे एक ऐसी दुनिया में रहे जहां उन्हें हर तरह से सुकून मिले। उस सुकून को प्राप्त करने के लिए लोग कई तरह के प्रयास करते है।

## सच्ची शांति ही सभी का उद्देश्य

सार्वभौमिक रूप में यदि हम देखें तो दुनिया में जितने भी संसाधन बनाए जा रहे है, उद्यम किए जा रहे है उसका सिर्फ एक ही मकसद है एक ऐसा वातावरण, एक ऐसा सुख जो मन और तन को सच्ची शांति और सुख दे सके। परन्तु यह सत्य है कि कई बार हम सिर्फ भौतिक संसाधनों और प्रयासों तक ही सीमित हो जाते है। जिसके वजह से जो चीजें भौतिकता से परे प्राप्त होने वाली है वे न तो उपलब्ध हो पाती है और न ही हम वहां तक पहुंच पाते हैं।

इसके उलट हम अपने आप को इस खोज में प्राप्ति से दूर तो होते ही है, साथ में आन्तरिक सशक्तिकरण के मामले में भी निचले स्तर तक चले जाते है। यही कारण है कि आज हम एक ऐसी दुनिया की तलाश में तेजी से आगे बढ़ रहे है जहां वह तलाश पूरी हो सके। कई ऐसी चीजें है जिसका निर्माण सिर्फ ईश्वरीय सत्ता के पास ही है, न तो मनुष्य उसका निर्माण कर सकता और न वह बना सकता है। हां, इतना जरूर है कि यदि वह ईश्वरीय योजना और उसके सिद्धांतों को अपना मार्ग बना लेता है तो उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

अब प्रश्न उठता है कि आज मानव चारों ओर से दु:ख, अशांति, निराशा, अत्याचार से घिरा हुआ है, तो उसे इन सबसे मुक्ति कैसे और कब मिलेगी? आखिर कौन दिलाएगा इससे मुक्ति ? यह सवाल आज सुरसा के समान मुंह बाएं खड़ा है। यह दुनिया बदलाव के मुहाने पर खड़ी है। लेकिन उससे पहले नई दुनिया की स्थापना भी शाश्वत सत्य है। इसी ईश्वरीय संविधान के तहत गुप्त रूप में नई दुनिया की स्थापना का महान और पुनीत कार्य चल रहा है। आने वाली नई दुनिया की स्थापना का यह ईश्वरीय संदेश सर्व मनुष्यात्माओं तक पहुंचाना ईश्वरीय परमात्म योजना का हिस्सा है।

## विभिन्न देशों में सतयुग ( स्वर्ग ) के नाम

**भारत:** सतयुग, कृतयुग, स्वर्ग, वैकुण्ठ

**अरबीयन:** बहिश्त, जन्नत, अल्लाह का बगीचा

**स्पेन:** एल डोरडो

**ईरान:** गार्डन ऑफ युमा

**ग्रीस और रोम:** गोल्डन एज

**स्केंडिनिव्या:** लॉडस ऑफ गॉड

**चीन:** क्वेन लुन

**ईजिप्त:** तेपझीप

**ऑस्ट्रेलिया:** ड्रीम टाइम

हेविन अर्थात् स्वर्ग यूनानी के लेटिन भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ होता है 'देवताओं का निवास स्थान' ईसाइयों के परलोक संबंधी विचारों के अनुसार इसका अर्थ यह हुआ कि आगामी दुनिया में आनंद से रहने का स्थान। दुनिया के सभी धर्म ग्रंथों में स्वर्ग की व्याख्या एक शांतिमय, आनंदमय, पवित्र, दुनिया के रूप में की गई हैं।

### कलियुग-सतयुग मिलन की संधि बेला

## 'संगमयुग'

'परिवर्तन प्रकृति का नियम है' जैसे दिन के बाद रात आती है। उसी तरह इस सृष्टि की भी हर पांच हजार वर्ष बाद हूबहू पुनरावृत्ति होती है। यह सृष्टि चार भागों में बंटी हुई है। जिममें सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग शामिल है। हम देखते है कि जब कभी दो चीजों का मिलन होता है तो उसे संगम कहा जाता है। इलाहाबाद में गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के मिलन स्थल को हम संगम के नाम से जानते है। उसी तरह सतयुग और कलियुग के मिलन को संगमयुग कहा जाता है। वर्तमान समय वहीं संगमयुग का समय चल रहा है। इसी समय परमपिता परमात्मा शिव इस सृष्टि पर आकर सतयुग (नई दुनिया) की स्थापना का दिव्य कार्य करते है।

**सबसे महत्वपूर्ण संगमयुग:** संगमयुग ही वास्तव में अमृतवेला और ब्रह्ममुहूर्त भी है, क्योंकि कलियुग रूपी रात और सतयुग रूपी दिन के इस संगम समय पर ही परमात्मा ज्ञानामृत पिलाते तथा आत्माओं को वापस ब्रह्मलोक में ले जाने का कर्त्तव्य करते हैं। संगमयुग की महिमा चारों युगों में श्रेष्ठ है, क्योंकि इसी समय पर ही ज्ञानसूर्य परमात्मा शिव अवतरित होकर अज्ञान निद्रा में सोए मनुष्यों को ज्ञान अमृत देकर पुन: पावन दुनिया में जाने के योग्य बनाते है।

परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में परकाया प्रवेश कर उनके मुख से सच्चा गीता ज्ञान देते है। इसलिए हे! मनुष्यात्मों अब अज्ञान निद्रा से जागो। परमात्मा से जन्मों-जन्म का राज्य भाग्य का वर्सा लेने का यहीं उचित समय है। कहीं ऐसा न हो कि परमात्मा आकर के अपना कार्य कर जाए और हम देखते ही रह जाए। अंत में पछतावें के अलावा हमारे हाथ कुछ नहीं लगेगा।

## क्या है सृष्टि चक्र का रहस्य ?

यह समय चक्र है। अविरल गति से घूमता रहता है। चार युगों का चक्र पूरा होने के बाद यह सृष्टि हुबहू रिपीट होती है। पांच हजार वर्ष का एक सृष्टि चक्र होता है। जिसमें चारों युगों का पूरा वृतांत है। अब यह पुरानी दुनिया के अंत और सतयुग के आदि का युग है, अब संगमयुग में नयी दुनिया की स्थापना हो रही है।

यह मनुष्य सृष्टि, प्रकृति-पुरुष का एक अनादि खेल है। हम देखते हैं कि स्वास्तिक सृष्टि-चक्र को चार बराबर भागों में बांटता है। लोग स्वास्तिक की रेखा को शुभ मानते और प्रत्येक कार्य के प्रारम्भ में इसे बनाते है, लेकिन इसके अर्थ और महत्व को नहीं जानते।

वास्तव में स्वास्तिक का चिन्ह इस सृष्टि के चार युगों को स्पष्ट करता है। यह सृष्टि चार युगों को दर्शाता है। इस सृष्टि चक्र की आयु पांच हजार वर्ष होती है। जिसमें से दो युग यानि सतयुग और त्रेतायुग स्वर्ग तथा द्वापर और कलियुग आयरन एज अर्थात नर्क की श्रेणी में आता है। प्रत्येक युग की आयु 1250 वर्ष होती है। चार युगों की पूरी आयु पांच हजार वर्ष की होती है। जिसमें मनुष्य के उत्थान और पतन की कहानी का पूरा वृतांत निहित है। ये चार युगों में मनुष्यात्मायें सतो, रजो तथा तमों की स्थिति से गुजरती है। कलियुग आते-आते आत्मा तमोप्रधान हो जाती है।

तब परमात्मा पुन: आत्मा को सतोप्रधान बनाने तथा नयी दुनिया की स्थापना के लिए अवतरित होते है और नयी दुनिया के नव निर्माण का कार्य प्रारम्भ होता है।

स्वयं परमपिता परमात्मा शिव कलियुग के अंत और सतयुग के आदि अर्थात् संगमयुग पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से सच्चा गीता ज्ञान दे रहे है। अत: हम सभी का कर्तव्य बनता है कि परमात्मा के बताए मार्ग पर चले और अपने जीवन को सफल बनाएं। अभी नहीं तो कभी नहीं।

### सतयुग

इस चक्र में सबसे पहले सतयुग दिखाया गया है। यहां स्वास्तिक की भुजा दायीं ओर है। दायीं भुजा अच्छाई अथवा शुभ की सूचक मानी जाती है। आदिकाल में सनातन धर्म के लोग दैवीगुण, श्रेष्ठ कर्म और सरल स्वभाव वाले थे। तब उन्हें सम्पूर्ण सुख-शांति प्राप्त थी।

आज यदि कोई मनुष्य अच्छे स्वभाव का होता है तो लोग कहते हैं कि यह तो जैसे कोई देवता है। वहीं कोई मनुष्य चरित्रहीन होता हैं, दूसरों को दु:ख देता है या अकाल मृत्यु या अन्न-धन की कमी होती है तो लोग कहते हैं कि भाई! कलियुग जो है। कलियुग में तो ऐसा ही होता है। आज कोई सतयुग थोड़े ही है कि लोग ईमानदार, सतोगुणी हो या पदार्थ सतोप्रधान हो। इससे स्पष्ट है सतयुग में मनुष्य सोलह कला संपूर्ण, सतोप्रधान एवं दैवीगुण वाले थे।

### त्रेतायुग

सतयुग के बाद त्रेतायुग आता है। यहां भी लोग पवित्रता-सुख-शांति से सम्पन्न थे। त्रेतायुग में आते ही मनुष्य की दो कलाएं कम हो जाती है। यहां मनुष्यों की 14 कलाएं होती है। इसलिए यहां स्वास्तिक की भुजा नीचे की ओर है, क्योंकि अब मनुष्य सतोप्रधान से उतरकर सतो-सामान्य अवस्था में आ गए।

सतयुग में जहां सूर्यवंशी घराना था, वहीं त्रेतायुग में चंद्रवंशी घराना होता है। इसमें श्रीराम-सीता का राज्य होता है। यहां भी लोगों में आत्मिक शांति होती है, परन्तु सतयुग की अपेक्षा थोड़ी कम हो जाती है।

यहां दो कलाएं कम होने के कारण मनुष्यों की आयु में भी फर्क हो जाता है और आयु सीमा कम हो जाती है। जिसके कारण यहां 12 जन्म होते हैं। लेकिन देवी-देवताओं का साम्राज्य यहां भी होता है।

### द्वापरयुग

सतयुग और त्रेतायुग के सूर्यवंश तथा चन्द्रवंश की आत्माएं अनेक जन्म सुख भोगने के बाद वाम मार्ग में चली जाती हैं। यहां, स्वास्तिक की भुजा बायीं ओर दिखाई गई है, क्योंकि बायां हाथ अपवित्रता का सूचक माना गया है।

सृष्टि में आदि सनातन देवी-देवता धर्म में गिरावट आने से अन्य धर्म स्थापित होने लगते है। द्वापर में आत्मा के अन्दर केवल नौ कलाएं रह जाती है। यहां प्रत्येक आत्मा रजोगुण अवस्था में होती है। यहीं से इब्राहिम द्वारा इस्लाम धर्म, बुद्ध द्वारा बौद्ध धर्म, ईसा मसीह द्वारा ईसाई धर्म की स्थापना होती है।

इस युग से ही भक्ति भाव की प्रथा प्रारम्भ होती है। अनेक धर्म होने के कारण अब कलह-क्लेश और लड़ाई-झगड़ा भी प्रारम्भ हो जाता है। काम-क्रोधादि विकारों के कारण दु:ख तथा अशांति की सृष्टि में प्रवेशता हो जाती है।

### कलियुग

अब आती है कलियुग की बारी। द्वापरयुग के अन्त तक आते आते बुरे कर्मों के कारण मनुष्यात्मायें कलाविहिन हो जाती है। यहाँ से पूरे मानवजाति में लड़ाई, झगड़ा, दुख-अशांति आदि बढ़ने लगते हैं। मनुष्यों के अन्दर बुराईयां और आसुरी प्रवृत्तियां घर कर जाती है। इसलिए इस युग में स्वास्तिक की भुजा ऊपर की ओर दिखाई गई है।

इस युग में तमोगुण की प्रधानता से लोग आसुरी स्वभाव के हो जाते हैं, और धर्म की अत्यन्त ग्लानि हो जाती है। जब पूरी दुनिया में अराजकता, आतंकवाद, मार-काट, नैतिक मूल्यों का पतन, आसुरी शक्तियों का साम्राज्य हो जाता है तब परमात्मा का अवतरण होता है। कलियुग की समाप्ति और सतयुग के प्रारम्भ में संगमयुग पर अवतरित होकर सर्व मनुष्यात्माओं को ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देते है और नयी दुनिया का निर्माण करते हैं।

## कैसी होगी आने वाली नई दुनिया?

कलियुगी दुनिया में रहने वाला हर कोई मनुष्य नयी दुनिया अर्थात सतयुगी दुनिया के बारे में जानने को लालायित रहता है। सतयुग में स्वाभाविक रीति से धर्मनिष्ठ, कर्मनिष्ठ, सतोप्रधान तथा निर्विकार होने के कारण उस समय के लोग देवी-देवता कहलाते थे।

उनके नाम के साथ श्री की उपाधि का प्रयोग किया जाता है और उनके हरेक अंग का वर्णन करते हुए कमल शब्द का प्रयोग किया जाता है, जैसे कमलनेत्र, कमलमुख, आदि। वहां लोगों में पारस्परिक प्यार इतना था कि वहां शेर और गाय एक घाट का पानी पीते थे। तब भारत में धन इतना था कि दूध और घी की नदियां बहती थी। तब यह भारत सोने का भारत था। यहां सोना, चांदी और रत्न, हीरें-जवाहरात इतनी मात्रा में थे कि लोग सोने की चादरों से अपने महलों को मढ़ देते थे और उनमें रत्न जड़ देते थे। तब दास-दासियां भी इतने सुखी और वैभव सम्पन्न थे कि जिसका आज चित्रण नहीं हो सकता। चूंकि लोग पावन थे, इसलिए उनकी आयु लंबी थी

और अकाल मृत्यु नहीं होती थी। बल्कि बहुत बड़ी आयु होने पर लोग स्वेच्छा से ही शरीर छोड़ देते थे। अत: कहा जाता है कि उन्हें काल नहीं खाता था और अकाल भी नहीं सताता था।

उसी समय का भारत अथवा विश्व वैकुण्ठ (स्वर्ग) था। उसे ही स्वर्ग या पैराडाइज कहा जाता है। चूंकि सभी लोग पवित्रताा और दिव्यगुणों की पूर्ण पराकाष्ठा को प्राप्त थे। इसलिए उन्हें 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी कहा जाता हैं, क्योंकि चांद की जब 16 कलाएं होती है तब वह सम्पूर्ण अवस्था और तेज से युक्त होता है।

### *नई दुनिया बनाने के लिए हुआ परमात्मा का अवतरण*



परमात्मा का अवतरण ही नई दुनिया बनाने के लिए हुआ है। मैं जब पहली बार संस्था में आई तो मुझे महसूस होने लगा कि यह कोई साधारण कार्य नहीं। जब इस संस्थान की स्थापना के प्रारम्भिक समय थे तब बाबा की कार्यशैली और आध्यात्मिक ज्ञान बिल्कुल क्लीन और क्लीयर था। कोई भी चीज समझने में समय नहीं लगा, बल्कि अनुभव भी होने लगा। उस समय तो मुट्ठी भर लोग थे, परन्तु आज तो लाखों लोग इस अभियान से जुड़ चुके है। आज परमात्मा के ज्ञान से लाखों लोगों के जीवन में एक नई रोशनी आई है। कई लोगों के परिवार टूटने से बचे है। संबंधों में समरसता आई है। नियमित राजयोग के अभ्यास से जीवन में सकारात्मकता आती है। जिससे हम असंभव कार्य को भी संभव कर सकते है। परमात्मा के ज्ञान से जो मनुष्य के अंदर बदलाव आते है वह देवत्व की ओर ले जाते है। इसलिए जब हम बदलेंगे तो पूरा विश्व बदलेगा। आज पूरी दुनिया में लाखों भाई-बहनें इस महान कार्य में तन-मन-धन से लगे हुए है। बाबा ने जो प्रारम्भ के समय में बाते कही थी अब वह साकार हो रही है। नयी दुनिया जरूर होगी ऐसा मेरा विश्वास है।

**राजयोगिनी दादी जानकी,** मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू, राजस्थान

### *यह विश्व विद्यालय अपने उद्देश्य में जरूर सफल होगा*

मुझे महसूस हो रहा है कि आज देश तेजी से अधोगति की ओर जा रहा है। अत्याचार, भ्रष्टाचार, स्वार्थ तेजी से बढ़ रहा है। ऐसी स्थिति में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में जो विद्या सीखाई जाती है वो मुझे महत्वपूर्ण लगती है। इन सब बुराईयों को रोकने के लिए कारगर है। जब तक लोगों को यह नहीं मालूम होगा कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और कहां जाना है तब तक बुराईयों को नहीं रोका जा सकेगा। इस विश्व विद्यालय का उद्देश्य एक नया समाज और नई दुनिया बनाने की है, यह जरूर सफल होगी।

**अन्ना हजारे,** सुप्रसिद्ध समाजसेवी, रालेगड़ सिद्धी, महाराष्ट्र

### *राजयोग के अभ्यास से सकारात्मक चिंतन बढ़ता है*

विज्ञान और तकनीक का सदुपयोग ऐसे समाज की संरचना के लिए करें जिसमें नकारात्मकता और अन्याय के लिए कोई स्थान न हो। विश्व एक परिवार और एक ईश्वर के सिद्धांत से पूरी दुनिया में अमन और शांति का वातावरण बनाया जा सकता है। ज्ञान के नियमित अभ्यास, पुरानी फिलॉसाफी और राजयोग का अभ्यास हमारे सकारात्मक चिंतन को बढ़ाता है। हमारी दिल से यह दुआ है कि यह संस्था पूरे विश्व में शांति स्थापन करे, भ्रातृत्व की भावना स्थापित करे और आपसी प्रेम की स्थापना करे।

**परमानंद झा,** उपराष्ट्रपति, नेपाल

## संपादकीय

### पाठकों का शुक्रिया...

पूरे विश्व में जो भी आत्माएं है सब परमात्मा की संतान है। चाहे वह किसी भी धर्म, मजहब या सम्प्रदाय अथवा जाति या वर्ग की हो। आज जो विश्व के हालात है वह किसी भी स्थिति से हमारे पक्ष में नहीं है। सबसे चिंताजनक मूल्यों की गिरावट को लेकर है। क्योंकि मूल्य ही मनुष्यता की रक्षा करते है। दिनोंदिन समाज में मूल्यों का पतन हमें कहां ले जाएगा, इस पर हम सभी को गहराई से सोचने की जरूरत है। यह क्यों हो रहा है, इसका सामूहिक उत्तर ढूढ़ने का वक्त आ गया है। हमने अपना पहला संस्करण 'शिव आमंत्रण' प्रकाशित किया था। जिसमें परमात्मा के अवतरण और उनके क्रिया कलापों तथा सभी धर्मों में मान्यताओं के बारीकियों से केन्द्रीकरण करते हुए परिभाषित करने का प्रयास किया था। जिसका आप सभी ने दिल खोलकर स्वागत किया था। मुझे खेद जरूर है कि यह अंक कुछ लोगों तक नहीं पहुंच पाया। परन्तु जिस तरह से आप सभी ने इसे पसन्द किया और ईश्वरीय संदेश परमात्मा के सभी बच्चों तक पहुचाने का प्रयास किया, वह सराहनीय है। परमात्मा के इस महान कार्य से नयी ऊर्जा का संचार हुआ। मुझे खुशी इस बात की भी बहुत है जो लोग संस्था से जुड़े नहीं है अथवा जानते नहीं है और 'शिव आमंत्रण' उनके हाथों में गया। बड़ी संख्या में लोगों ने हमें फोन कर इसकी आवश्यकता जताई और हमने इसे उपलब्ध कराने का पूरा प्रयास किया। बहुत सारे लोगों ने इसे नियमित उपलब्ध कराने का भी आग्रह किया। समय प्रति समय इस तरह के संस्करण लाने का प्रयास करेंगे ताकि परमात्मा का संदेश सभी को मिले। काफी सोच विचार के बाद यह निष्कर्ष निकालने पर हम सहमत हुए कि हमें परमात्मा ने जो महान जिम्मेदारी सौंपी है कि परमात्मा के हर एक बच्चे को ईश्वर के आने की सूचना मिले। उसके लिए हमें हर स्तर से प्रयास करने की जरूरत है। हमने दूसरा संस्करण भी इसी के तहत निकालने का संकल्प किया और वह आप के सामने रखने का प्रयास किया है। हमारा प्रयास है कि आज लोग भय और चिंता में जी रहे है। ऐसे दौर में हम सभी का दायित्व बनता है कि लोगों को परमात्म अवतरण की सूचना देकर नयी उर्जा का संचार करें। आने वाली दुनिया का कैसे निर्माण हो रहा है? इस संबंध में जानकारी दें ताकि वे अपने जीवन को भी परमात्मा के इस सहज मार्ग में लगा सके। इसे जो जिस रूप में स्वीकार करना चाहे उसके सोच और पसन्द को सामने रखते हुए नए तरीके से रखने का प्रयास किया है। इसमें हमने ना केवल परमात्मा के संदेशों को रखा है बल्कि जो लोग इसका आनन्द उठा रहे है अथवा जो परमात्मा के प्रेम में अपनी नई जिन्दगी बनाते हुए नई दुनिया के अधिकारी बन रहे है। उनके भी विचार रखे है। ताकि इस विज्ञानवादी युग में हर किसी को एहसास हो सके। मुझे उम्मीद है यह अंक आप सभी को अवश्य पसन्द आएगा और इसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे।

# शक्ति स्वरूपा बन, कर रही विश्व नवनिर्माण

**मेरी कलम से**

**डॉ. मनोज लोढ़ा**

**नारी को कामिनी की बजाए कल्याणी और अबला की बजाए शक्तिरूपा बनाने का कठिन कार्य आज से लगभग आठ दशक पहले आरंभ किया गया। आठ दशक पहले नारी की स्थिति की कल्पना मात्र ही रूह कंपा देने के लिए काफी है। सामाजिक स्तर पर प्रबलतम विरोध के बावजूद दादा लेखराज ने अपनी दृढ इच्छाशक्ति और पवित्र संकल्प के साथ नारी को सशक्त करने का प्रबल संकल्प लिया।**

*मन में विश्वास, शुभ संकल्प एवं दृढ़ इच्छाशक्ति हो तो कोई भी कार्य असंभव नहीं... विश्व नवनिर्माण का संकल्प लेती युवा ब्रह्माकुमारी बहनें।*

जब कभी भी महिला जागृति अथवा महिला सशक्तिकरण की चर्चा होती है तो जेहन में एक ही नाम उभर कर आता है जो संभवत: विश्व में एक मात्र ऐसा संगठन है जिसका अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नाम है और वह है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। यह एक ऐसी संस्था है जो आरंभ काल से ही मूल्यों और सिद्धांतों को लेकर चली और आज भी यह कायम है। नारी को कामिनी की बजाए कल्याणी और अबला की बजाए शक्तिरूपा बनाने का कठिन कार्य आज से लगभग आठ दशक पहले आरंभ किया गया। आठ दशक पहले नारी की स्थिति की कल्पना मात्र ही रूह कंपा देने के लिए काफी है। सामाजिक स्तर पर प्रबलतम विरोध के बावजूद दादा लेखराज ने अपनी दृढ इच्छाशक्ति और पवित्र संकल्प के साथ नारी को सशक्त करने का प्रबल संकल्प लिया। कहते हैं निष्काम और निष्पाप भाव से किया गया कार्य कभी अधूरा नहीं रहता है और इसका सुफल अवश्य ही मिलता है। आज इतना बडा संगठन विश्व के सम्मुख खड़ा है और उनके सिद्धांतों पर आज भी चल रही है।

बिना किसी व्यावसायिक उद्देश्यों के सामाजिक उत्थान और स्व की ओर प्रेरित करने वाली यह संस्था आज बिना किसी कठिनाई और विघ्न के कदमताल कर रही है और लोगों के जीवन में खुशियां उत्साह और आस्था जगाने का कार्य कर रही है। वर्ष पर्यन्त जातिगत भेदभाव से दूर होकर समाज के अनेक समुदायों के साथ, लेखकों, डॉक्टरों, पत्रकारों, शिक्षाविदों, वकीलों, राजनीतिज्ञों के बीच संस्था के मुख्यालय माउण्ट आबू में बैठकर समाज में शांति और मूल्यों की स्थापना के लिए गहन विमर्श किया जाता है। यहां से सैकड़ों की तादाद में आने वाले लोगों को सामाजिक मूल्यों की स्थापना के लिए प्रेरित किया जाता है।

सामाजिक दुर्गुणों पर गहन चिन्तन करने के उपरांत अनेक विद्वान बिना किसी धार्मिक और वैचारिक आग्रह के इस संस्था के मूल्यों और चिन्तन को आगे बढ़ाने में स्वयंमेव आगे आकर अपनी भूमिका निभाने का प्रण करते हैं। वर्ष दर वर्ष होने वाले आयोजनों में समाज का कोई भी वर्ग संस्था के वैचारिक चिन्तन की इस आहुति में भाग लेने से अछूता नहीं रह पाता। यही कारण है कि भाइचारे और प्रेम की इस कहानी का आगाज भारत से लेकर विश्व के कोने-कोने में भी संस्था के केन्द्र के माध्यम से सतत होता रहता है।

तनाव मुक्त होकर अपने जीवन को सुखमय, सरल और सहज बनाने की जो प्रेरणा इस संस्था की बहनों से मिलती है उसको तो स्वयं संस्था में जाकर ही अनुभव किया जा सकता है। राग, द्वेष, मलिनता और क्रोध से परे रहकर जनसेवा का साक्षात् दर्शन होता है। वस्तुत: एक बार संस्था के मुख्यालय माउण्ट आबू में आकर इसे अनुभूत कर व्यक्ति स्वयं के जीवन की शैली को बदल कर सुखद अनुभूति पा सकता है। इस संस्था की भावनाओं को संक्षिप्त में कहा जाए तो संभवत: नीचे लिखी पंक्तियां इसे परिभाषित करने को पर्याप्त होंगी।

*'सब सौंप दो प्यारे प्रभू को, सब सरल हो जाएगा चिन्ता सभी मिट जाएगी जीवन सफल हो जाएगा'*

**लेखक: हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय पाटन में पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष है।**
Email- themanojlodha@gmail.com

### *बाबा का ज्ञान बिल्कुल नया है*

बाबा ने जो ज्ञान दिया है वह बिल्कुल नया ज्ञान है। जब ज्ञान नया है तो उससे तो नई दुनिया ही तो बनेगी। प्रारम्भ में ही हमें बाबा ने नई दुनिया का साक्षात्कार करा दिया था। हमें तो उस समय ही महसूस होने लगा था कि यह जो ज्ञान है वह नई दुनिया के लिए ही है। क्योंकि ऐसा ज्ञान कभी न तो मैंने सुना था और न किसी ने सुनाया था। इससे जीवन में इतना तेजी से सकारात्मक बदलाव हुआ कि कोई भी संशय नहीं रहा कि यह परमात्मा का कार्य नहीं है। इसलिए मुझे तो बेहद खुशी है कि मैं परमात्मा के इस अभियान का हिस्सा हूं।

**राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी,** अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू , राजस्थान

### *भगवान सचमुच इस धरती पर आ चुके है*

मुझे 2009 में राष्ट्रपति से शौर्य चक्र प्राप्त हुआ। सफलता के नशे में मैं दूसरों से अच्छी तरह से व्यवहार नहीं करता था। सन् 2010 में मैंने स्वयं के ऊपर से पूरी तरह नियंत्रण खो दिया और हर बुराईयां हमारे अंदर आ गई। जहां पर मेरी नियुक्ति हुई थी वहां मैं स्वयं से खुश नहीं था और मैं हमेशा डिप्रेशन में रहने लगा। उसी समय मैं कुछ ब्रह्माकुमारी बहनों के सम्पर्क में आया। उन्होंने मुझे सफलता और जीवन का सही अर्थ समझाया। तब मैंने अनुभव किया कि भगवान सचमुच में इस धरती पर आए हुए है और नई दुनिया बना रहा है। तब मैंने 7 दिन तक राजयोग कोर्स किया। आज मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि मैं भगवान का बच्चा हूँ। मेरी सभी परेशानियां खत्म हो गई। आज में पहले की अपेक्षा ज्यादा खुश और संतुष्ट रहता हूं। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे परमात्मा से मिलन मनाने का सौभाग्य मिला।

**कर्नल सुंदर विष्ट,** राष्ट्रपति द्वारा शौर्य चक्र से सम्मानित

### *सतयुग का समय समीप आ रहा है*

शिव बाबा द्वारा बताए मार्ग पर चलकर ही सभ्य समाज का निर्माण हो सकता है। ब्रह्माकुमारीज़ का नारा है स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन। क्योंकि जब तक हम स्वयं को नहीं बदलेंगे तब तक विश्व का परिवर्तन नहीं हो सकता है। शिव बाबा के ज्ञान से हम स्वयं को बदलकर दुनिया को बदल सकते हैं। यहां के सिद्धांत का कोई विकल्प नहीं है। दुनिया आज जिस दौर से गुजर रही है, उससे सतयुग आने का समय समीप आता जा रहा है। आज मनुष्यों के स्वार्थ इस हद तक बढ़ गए हैं कि अब उसका अंत होना ही चाहिए। आज लोगों के जीवन में दु:ख, अशांति, क्रोध, फूहड़ता, ईर्ष्या की भावना बढ़ती जा रही है। इस दुनिया में करोड़पति भी सुखी नहीं है। वह भी अंदर से दु:खी है। इसलिए यह दुनिया बदलनी चाहिए। भगवान के बताए मार्ग पर चलकर ही हम नई दुनिया के लायक बन सकते है।

**देवल गुहराय,** निदेशक, बांग्ला फिल्म एवं कवि, कोलकाता

# सतयुगी दुनिया में कैसे जाएंगे हम?

**सवाल उठता है कि यदि नई दुनिया की तैयारी चल रही है तो उस दुनिया में जाने के कौन योग्य होंगे? कैसे हम नई दुनिया में जाने योग्य बने? कौन नई दुनिया का रास्ता बताएगा? आइए इन सभी प्रश्नों पर हम नजर डालते है।**

### योग्यताएं ले जाती देवत्व की ओर

इसी तरह मनुष्य जीवन में कुछ ऐसी योग्यताएं होती है जो मनुष्य जीवन से ऊपर उठाते हुए देवत्व स्थिति की ओर ले जाती है। ये योग्यताएं मनुष्य जीवन के सच्चे सुख और शांति का मार्ग प्रशस्त करती है। रहा सवाल नई दुनिया यानि श्रेष्ठ मूल्य आधारित समाज का तो उसमें भी जाने वाले निश्चित तौर पर मूल्यवान और मूल्यनिष्ठ व्यक्ति ही होगा। मूल्यनिष्ठ का अर्थ यह नहीं कि केवल हम भौतिक चीजों में परफेक्ट रहें। बल्कि आंतरिक स्तर पर हमारी आत्मा के अंदर कैसे मूल्यनिष्ठ संस्कार विकसित हो इसके प्रयास की जरूरत होती है। यही कारण है कि आज हर इंसान को नि:स्वार्थ प्यार, पवित्रता, मधुरता, सहयोग, सद्भावना, की जरूरत होती है।

### मूल्यों की डिग्री जरूरी

नई दुनिया में जाने की क्वालिफिकेशन कोई स्थूल डिग्री नहीं, बल्कि मूल्यों की डिग्री की जरूरत होती है। मूल्यों की क्वालिफिकेशन पवित्रता, नि:स्वार्थ, प्यार, संतुष्टता, मधुरता, भ्रातृत्व भाव, एकता है। इसके बल से ही इंसान नई दुनिया का उत्तराधिकारी बन सकता है। क्योंकि नई दुनिया (स्वर्ग) में कभी आसुरी संस्कारों या स्वभावों के लिए कोई स्थान नहीं होता। वहां तो सोलह कला संपूर्ण, संपूर्ण निर्विकारी, दैवी गुणों से भरपूर देवता ही निवास करते है।

### मूल्यों को खरीदा नहीं जा सकता

जीवन में मूल्य, प्रेम, सद्भाव, शांति, पवित्रता ही वह श्रेष्ठ गुण है जिन्हें खरीदा नहीं जा सकता। बल्कि इसे स्वयं ही व्यक्तिगत स्तर पर पहल करते हुए विकसित करना होता है। मूल्यों का विकास आध्यात्मिकता से ही संभव होगा, क्योंकि इससे मनुष्य संपूर्णता की स्थिति में होता है।

### *ईश्वर के हाथों में नई दुनिया का नेतृत्व*

सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि आने वाली नई दुनिया की तैयारी करने का नेतृत्व स्वयं ईश्वर के हाथों में है। उनके मार्गदर्शन में चयन और निर्वाचन की व्यवस्था प्रारंभ है। इससे न केवल हमारा भविष्य उज्जवल होगा बल्कि हमारा वर्तमान भी सुंदर, श्रेष्ठ और शांतिप्रिय होगा। इसलिए हे! मनुष्यात्माओं इस धरा पर स्वयं ज्ञानसूर्य परमपिता परमात्मा शिव का अवतरण हो चुका है। परमात्मा हमें नई दुनिया में चलने लायक बनाने के लिए सच्चा गीता ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे है। अत: हमारा नैतिक कर्तव्य है कि परमात्मा के बताए मार्ग पर चलकर अपने अपना जन्मों-जन्म का भाग्य बनाकर अपने जीवन को सफल बनाए।

### प्रतिदिन आध्यात्मिकता से सींचे मन को

इसके लिए प्रतिदिन ईश्वर के सानिध्य में रहते हुए अपने मन को आध्यात्मिकता से सींचे, मूल्यों को विकसित करने के लिए ईश्वर का ध्यान करें। क्योंकि परमात्मा ही सर्वगुणों और शक्तियों का सागर है। उसके साथ जब हमारा कनेक्शन होगा तब उसकी शक्तियां हमारी आत्मा को भरपूर करेंगी और हम नई दुनिया में जाने के अधिकारी बन जाएंगे। इसलिए आइए हम सब परमपिता परमात्मा से शक्तियों एवं गुणों से भरपूर होकर नई दुनिया में जाने की तैयारी करें।

# स्वर्ग को लेकर विभिन्न धर्मों की मान्यताएं

### स्वर्ग में बहती थी चार नदियां

बाईबल के पहले अध्याय में स्वर्ग (नई दुनिया) के बारे में लिखा है कि भगवान ने पूरब से लेकर पश्चिम तक जो स्वर्ग लोक बसाया उसमें चार नदियां बहती थी। भगवान ने पैदा किए मनुष्यों को वहीं बसाया। वहीं ब्राहण वैदिक ग्रंथ में लिखा है कि जल प्रलय के उपरांत सिंधु से नील क्षेत्र तक की स्वर्ग सभ्यता के खंडित होने के बाद कुछ लोग इधर-उधर हो गए। हमारे पूर्वज जो देव या अमर जाति के थे, इसी पावन वसुंधरा के निवासी थे।

### स्वर्ग को बताया नंदनवन

महाभारत के 261-9-16 अध्याय में लिखा है कि स्वर्ग (पवित्र नंदनवन) सदाचारी लोगों के रहने का स्थान है। वहां भूख, प्यास, थकावट, ठंडी, गर्मी नहीं होती है। वहां सदा सुखदायक, सुगंधनी हवा बहती है। वहां के गीत कर्ण प्रिय होते है। दु:ख, बुढ़ापा, कष्ट, शोक नहीं होते है। वह दुनिया अपने कर्मों के परिणामस्वरूप होती है। दिव्य सुगंधित हार कभी सूखते नहीं है। मत्सर, दु:ख, ईर्ष्या, उनके पास नहीं पहुंच सकती है।

### स्वर्ग में नहीं होता मृत्यु का डर

ऋगवेद के मंडल 1 की सूक्ति 164 में स्वर्ग के बारे में लिखा है कि जो पिता परमात्मा को नहीं जानते वे उसको (स्वर्ग) को नहीं पा सकते। वहीं अर्थवेद के 18-4-4 में नई दुनिया के बारे में लिखा है कि स्वर्ग में मनुष्य वृद्ध नहीं होगा। वहां डर और मृत्यु नहीं होगी।

## पाठक पीठ

शिव आमंत्रण पेपर मिला जो कि शिवरात्रि विशेषांक था और इसे शिवरात्रि के उपलक्ष्य में बांटना था। मेरे मन में विचार आया कि क्यों न इसे न्यूज पेपर में छपवा दिया जाए। मैंने अपने ब्यूरो चीफ से पेपर में छपवाने के लिए कहा तो वे इसे छापने के लिए तैयार हो गए। मुझे तब बहुत आश्चर्य हुआ जब उन्होंने इसे फ्री में छापने के लिए कहा। 20 फरवरी को पहला पेज छपा। फिर इक्कीस फरवरी को दूसरा पेज छपने के लिए भेजा गया, लेकिन पेपर में न्यूज अधिक होने के कारण ब्यूरो ने कहा कि इसे आप अगले दिन छपवा लेना। इत्तेफाक से 21 फरवरी को न्यूज पेपर नहीं आया, क्योंकि प्रिंटिंग मशीन फेल हो गई थी। हमारे ब्यूरों ने मुझे बुलाकर कहा तुम पहले अपना चार पेज छपवा लो, हम अपना न्यूज बाद में छपवा लेंगे। इस तरह शिव आमंत्रण चार दिन लगातार राज एक्सप्रेस में प्रकाशित हुआ।

**उमेश,** राज एक्सप्रेस, शहडोल, मप्र

मैंने शिवरात्रि विशेषांक पढ़ा। यह अंक पढ़कर मुझे परमात्मा के बारे में सत्य परिचय मिला। परमात्मा के धरती पर अवतरण का संदेश जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। ताकि लोगों को परमात्मा का ज्ञान मिल सके।

**बीएम सींग,** सतना, मप्र

शिव आमंत्रण पेपर मिला। जिसे पढ़कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई। मुझे यह विचार आया कि इस पेपर को हम अपने यहां सबकों दे, जिससे भगवान का संदेश सबको मिल सके।

**पवन गुप्ता,** जम्मू कश्मीर

शिव आमंत्रण में प्रकाशित अनुभवों को पढ़कर मुझे यह पूरा निश्चय हो गया कि परमात्मा इस धरती पर आ चुके है।

**जितेन्द्र मालवीय,** इंदौर

मैं घरेलू समस्याओं से दु:खी थी कि ऐसे समय पर शिव आमंत्रण पेपर मिला जिसे पढ़कर मुझे एक नई रोशनी मिली।

**सतरूपा भंडारी,** छत्तीसगढ़

### *ब्रह्माकुमारीज़ की फिलॉसाफी में पूर्ण विश्वास है*

आज समाज की जो स्थिति है वह अत्यंत चिंताजनक है और दिन-प्रतिदिन हालात बदतर होते जा रहे है। इसका मुख्य कारण नैतिक मूल्यों का समाप्त होना है। ब्रह्माकुमारीज़ नैतिक मूल्यों का विस्तार से ज्ञान देती है। जिससे लोगों के जीवन में मूल्यों का समावेश होता है। सभ्य समाज मधुबन के मॉडल जैसा हो सकता है। जिसमें हर व्यक्ति सुखी, संपन्न तथा लोग शांति से जीवन व्यतीत करें। ये संस्था नैतिक मूल्यों का समाज में आदर्श प्रस्तुत कर रही है। ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा दिए जा रहे ज्ञान और सिद्धांत से निश्चित ही श्रेष्ठ समाज बन सकता है। इसका और कोई स्वरूप नहीं है। मुझे ब्रह्माकुमारीज़ की फिलॉसिफी में पूर्ण विश्वास है। यहां का ज्ञान सरल एवं स्पष्ट है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिए जा रहे ज्ञान को जीवन में धारण कर स्वस्थ समाज की स्थापना में मददगार बनें और सहयोग करें।

**शत्रुधनसिंह,** एडिशनल कमिश्नर, वाणिज्य कर, पटना, बिहार

# परमात्मा के अनुसार ऐसी होगी आने वाली नई दुनिया

## ज्ञानसूर्य परमपिता परमात्मा के बताए अनुसार नई दुनिया (स्वर्ग) इन विशेषताओं से भरपूर होगी

अभी तक हमने और आपने आने वाली दुनिया के बारे में कई तरह की बातें सुनी हुई थी। सबने अपने-अपने तरह से नई दुनिया की कल्पना कर रखी है। वर्तमान में स्वयं परमात्मा शिव हमें सतयुगी नई दुनिया के बारे में बता रहे है। परमात्मा के बताए अनुसार नई दुनिया में देवी-देवता सर्व खजानों, गुणों और सर्व प्राप्तियों से भरपूर होंगे। वहां वैभवों की खानें भरपूर होगी।

वहां एक भाषा, एक मत, एक धर्म होता है। नई दुनिया में भाषा शुद्ध हिन्दी होगी और प्रत्येक शब्द वस्तु को सिद्ध करेगा। पावन दुनिया में संपन्नता इतनी होती है कि जिसकी यादगार में आज भी कहा जाता है कि वहां घी और दूध की नदियां बहती थी।

### वहां सभी मनुष्य होंगे पूर्ण स्वस्थ

वहां न डॉक्टर होंगे न हॉस्पिस्टल होंगे क्योंकि सभी लोग पूर्ण स्वस्थ्य होंगे। किसी भी मनुष्य को कोई बीमारी नहीं होगी। लोगों में आपसी सामंजस्य होने से छोटे-बड़े का भेदभाव नहीं होगा। सभी में भाईचारा, प्रेम, सद्भाव, एकता होगी। मनुष्यों में आत्मिक शांति

होने के कारण वहां न तो कोर्ट, न वकील, न पुलिस, न थाने होंगे। नई दुनिया में सुख-समृद्धि और शांति का मुख्य कारण उस समय के राजा तथा प्रजा सभी पवित्र और श्रेष्ठाचारी थे।

इसी की याद में उन्हें सोने के रत्न जड़ित ताज के साथ पवित्रता का भी ताज दिखाया जाता है। वहां की पढ़ाई भी एक खेल है। खेल-खेल में पढ़ेंगे। वहां का इतिहास भी संगीत और कविताओं में होता है। वहां के महलों के अंदर भी विमानों की लाइन लगी होगी और विमान भी चलाने के बहुत सहज होंगे। एटॉमिक एनर्जी के आधार पर सब काम चलेगा। विमान की इतनी तेज स्पीड होगी कि शुरू किया और पहुंच गए।

### पूर्वजों ने भी नई दुनिया का उल्लेख किया

यहां तक की हमारे भविष्य वक्ताओं और पूर्वजों ने भी इस युग के बारे में समय-समय पर इस बात को दर्शाया है कि आज इस असमानता, कोलाहल और बढ़ती अनैतिकता वाली दुनिया में जब नैतिक मूल्यों का पूर्ण नाश हो जाएगा तो इसका विनाश होकर फिर से सत्य और समानता वाली दुनिया स्थापित होकर धर्म की पुर्नस्थापना होगी। इसी नए युग में व्यक्ति दैवी पद पर विराजमान रहता है। यदि इन सारी बातों से निष्कर्ष निकाला जाए तो स्वर्णिम युग एक आदर्श स्वरूप में था।

### ... और प्रकृति भी सतोप्रधान थी

आने वाली दुनिया में प्रकृति और पुरुष दोनों ही सतोप्रधान होंगे। पूर्व में भी इस सतोप्रधानता का शास्त्रों और पुराणों में उल्लेख है। विश्व में संपूर्ण सुख शांति का साम्राज्य होगा। सोने की चिड़िया कहे जाने वाले भारत में सृष्टि फूलों का बगीचा कहलाती थी।

प्रकृति सतोप्रधान थी और किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदाएं नहीं थी। मनुष्य भी सतोप्रधान, दैवीगुण संपन्न थे और आनंद खुशी से जीवन व्यतीत करते थे। उस समय का यह संसार स्वर्ग या सतयुग कहलाता था। श्रीकृष्ण तथा श्रीराधे सतयुग के प्रथम राजकुमार और राजकुमारी थे। जिनका स्वयंवर के पश्चात् श्रीनारायण और श्रीलक्ष्मी नाम पड़ता है। उनके राज्य में् शेर और गाय भी एक घाट पर पानी पीते थे अर्थात् पशु पक्षी तक संपूर्ण अहिंसक थे।

## प्रतिक्रिया एवं सुझाव

यह अंक आपको कैसा लगा, कृपया आप अपनी प्रतिक्रिया एवं सुझाव निम्न पते पर फोटो सहित भेंजे। प्रकाशन योग्य होने पर हम इसे प्रकाशित करेंगे।

**पता:** ब्रह्माकुमारीज़ पब्लिक रिलेशन ऑफिस, शांतिवन, आबूरोड, जिला सिरोही, राजस्थान पिन: 307501 (फोन: 02974-228230)

Email- shivamantran.media@gmail.com

# जैसी अवस्था, वैसी व्यवस्था

**जी हां यह सच है कि यदि आपकी अवस्था अच्छी होगी तो निश्चित तौर पर जिन चीजों का प्रबंधन करेंगे वह भी अच्छा होगा। क्योंकि आंतरिक स्थिति और शक्तिपुंज से ही बाहरी वस्तुएं संचालित होती है। यदि हमारे अंदर में शांति का स्वभाव एवं मूल्य है तो जाहिर सी बात है आप जहां भी होंगे आपसे लोगों को शांति मिलती रहेगी। मूल्य होंगे तो आसुरी वृत्तियां हमेशा पराजित होती रहेंगी। इसलिए नई दुनिया बनाने के लिए परमात्मा सबसे पहले नई दुनिया में जाने वालें लोगों की आन्तरिक अवस्था को मूल्यनिष्ठ और अलौकिक बनाते है ताकि एक दिव्य और श्रेष्ठ इंसान तो बने ही साथ में श्रेष्ठ समाज भी स्थापित हो।**

हम बात कर रहे है अवस्था से व्यवस्था परिवर्तन की। आज अगर किसी भी प्रबंधन, संस्थान एवं सामाजिक ढांचे की व्यवस्था जर्जर और बिगड़ती जा रही है तो उसके लिए जिम्मेदार कौन हो सकता है? स्पष्ट है कि वहां कार्यरत लोगों की जैसी अवस्था होगी अर्थात् जिनके मन में जिस तरह का भाव और सोच होगी उसी तरह उसकी रचना होगी। इन सब चीजों के लिए हम भले ही दूसरों के ऊपर उंगली उठा देते है, परन्तु कहीं न कहीं हम भी उसमें जिम्मेदार है। व्यवस्था किसी भी एक आदमी से संचालित नहीं होती है। क्योंकि यदि हम समाज में रह रहे है तो हम भी उससे जुड़े हुए है।

## पापाचार बढ़ने के हम स्वयं जिम्मेदार

आज यदि भ्रष्टाचार, अत्याचार, पापाचार, आतंकवाद, घूसखोरी और चोरी-लूट की घटनाएं बढ़ रही है तो उसका मुख्य कारण मूल्यों का पतन होना है। खुद को मूल्यनिष्ठ बनाने की शुरुआत हमें स्वयं से ही करनी होगी। जब हम बदलने का प्रयास करते है तो दूसरे भी बदलना प्रारम्भ हो जाते है। यदि हम किसी व्यवस्था को बनाए रखने के लिए दूसरों की ओर देखते है तो हम व्यवस्था नहीं बना सकते है, बल्कि हम उसमें रूकावट पैदा करते है, क्योंकि हम कहीं न कहीं व्यवस्था से जुड़े हुए है।

इसलिए परमात्मा आकर पहले हमारी आंतरिक अवस्था को सशक्त करने की शिक्षा देते है। ताकि जब हम बाहरी व्यवस्था में उतरे तो उसके साथ न्याय कर सकें। आंतरिक अवस्था से तात्पर्य मूल्यों से सुशोभित जीवन से है, क्योंकि आंख को क्या देखना चाहिए, कान को क्या सुनना चाहिए, मुंह से क्या बोलना चाहिए तथा दिमाग को क्या सोचना चाहिए और क्या नहीं इस विवेक के आधार पर ही हम स्वयं के और दूसरों के प्रति न्याय कर पाएंगे। जब इन सब बातों पर अटेन्शन होगा तब उसके द्वारा जो भी कर्म होंगे तो सब परमात्मा के कार्य में सहयोगी होते जाएंगे। जब दुनिया की सभी व्यवस्थाएं खराब एवं फेल होने लगती है, तब परमात्मा आकर नई व्यवस्था और मनुष्यात्माओं की अवस्था को श्रेष्ठ बनाते है।

इसकी वर्तमान युग में कुछ बानगी दी गई है। जिससे आप सहज ही आन्तरिक अवस्था और व्यवस्था का अंतर और महत्व को समझ सकेंगे। बात मुम्बई स्थित मलाड इलाके की है। जहां ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़े लोगों को बीएमसी ने एक ऐसी जिम्मेदारी सौंपी, जिसे लगभग असम्भव सा माना जाता था, लेकिन अवस्था का व्यवस्था पर असर पड़ता है। क्योंकि जहां अवस्था श्रेष्ठ और मूल्यों से परिपूर्ण होंगी वहां अव्यवस्था हो ही नहीं सकती।

बीएमसी द्वारा मलाड के लिबर्टी गार्डन पर बहुत पैसे और संसाधन खर्च करने के बाद भी गार्डन अपनी दुर्दशा पर आंसू बहा रहा था। करोड़ों रुपए खर्च करने के बाद न तो सही दिशा और न ही दशा बदली। मुम्बई म्युनिसिपल कार्पोरेशन द्वारा गार्डन यह विश्वास जताते हुए ब्रह्माकुमारीज़ को सौंपा गया ताकि इसकी व्यवस्था सुधर सकें। यह विश्वास विकसित करने के लिए काफी था कि आज गार्डन केवल लोगों के खेलकूद का नहीं बल्कि बौद्धिक और पारिवारिक समृद्धि का आधार बन गया। अब यह बगीचा पूरे शहर के लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं। यह गार्डन आध्यात्मिक मूल्यों, सद्भावना और एकता की खुशबू फैलाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। शहर के तमाम जिम्मेदार अधिकारियों से लेकर बुद्धिजीवियों को भी इस पर गर्व है।

### ब्रह्माकुमारीज़ को गार्डन सौंपने से पहले इसकी हालत दयनीय थी

लिबर्टी गार्डन जब ब्रह्माकुमारीज़ को सौंपा गया तब इसकी हालत दयनीय थी। हम लोग इसका प्रबंधन सुचारू रूप से कर नहीं सकते थे, तो मुझे लगा कि ब्रह्माकुमारीज़ इसे बेहतर तरीके से सम्भाल सकती है। ब्रह्माकुमारीज़ ने गार्डन को बिल्कुल बदल दिया है। इसमें अब मेडिकल कैम्प, बच्चों के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। आज यह गार्डन लोगों के लिए आध्यात्मिक केंद्र बना हुआ है। यहां से लोग तन एवं मन को स्वस्थ्य रखने की शिक्षा लेकर जाते हैं। जब मेयर श्रद्धा यादव को यहां लाया गया, तो वे इसकी सुंदरता एवं व्यवस्था को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुई। उस समय गार्डन में खेलों के उद्घाटन का कार्यक्रम रखा गया था। जिसमें उद्धव ठाकरे भी आए थे और वे गार्डन के नए स्वरूप को देखकर बहुत ही प्रभावित हुए।

**अशोक पटेल,** तात्कालिक, डेप्युटी चेयरमैन, बीएमसी, मुंबई

*ब्रह्माकुमारीज़ संस्था से जुड़े भाई-बहनों को लिबर्टी गार्डन की जिम्मेदारी सौंपी गई तो इस तरह सूरत बदल गई।*

*ब्रह्माकुमारीज़ को गार्डन सौंपने के पहले ये थे हालात।*

*बाद में इस तरह बदल गया गार्डन।*

## दादी के सानिध्य में हुई शुरूआत

लिबर्टी गार्डन के कायाकल्प की शुरूआत मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी, अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी और मलाड सबजोन प्रभारी ब्र. कु. दिव्या बहन के सान्निध्य में हुई। तब से लेकर आज तक यह गार्डन प्राकृतिक सुगंध के साथ आध्यात्मिक सुगंध की खुशबू चारों ओर फैला रहा है। यहां से अनेक लोगों के जीवन को एक नई रोशनी मिली है। अवस्था से व्यवस्था में परिवर्तन का यह अनूठा उदाहरण है। यह तो केवल एक बानगी भर है। ऐसे मुम्बई सहित भारत के कई स्थानों पर इस तरह की चीजें मिल जाएगी। इस व्यवस्था के परिवर्तन की आधारशिला ब्रह्माकुमारी कुन्ती बहन ने रखी। जिनकी देखरेख में हजारों लोग तन-मन को स्वस्थ्य रखने की कला सीख रहे हैं।

*बच्चों के लिए संस्कार का केंद्र बना लिबर्टी गार्डन।*

**...तो अपने आप बदल जाएगी व्यवस्था**

यह तो एक बानगी भर है कि भागदौड़ भरी जिन्दगी भी सहजता से चल सकती है। जब हम अपने मन के तार को उस आध्यात्मिक पावर सत्ता से जोड़ते है। तो उससे निकलने वाली शक्तियां और मूल्य हमारे चारों ओर रक्षा कवच का कार्य करती हैं। जब हम अपनी अवस्था को बदलने का प्रयास करेंगे तो निश्चित तौर पर व्यवस्था अपने आप ही बदलती चली जाएगी। अब यह गार्डन न केवल घूमने फिरने का स्थान है बल्कि अब यहां से आध्यात्मिक खुशबू चारों ओर फैल रही हैं। उससे लोग अपनी जिन्दगी को सही पथ की ओर अग्रसर कर रहे है। बच्चे हो या बूढ़े, स्त्री हो या पुरुष सभी यहां आकर अपने जिन्दगी के मायने तय करते है।

# परमात्मा अपना वादा पूरा करने आते

सतयुग और त्रेतायुग में तो सत्य धर्म होता है। सतयुग में मनुष्य 16 कला एवं त्रेता में 14 कला संपूर्ण निर्विकारी होते है। यहां हीरे-जवाहरात के अपार भंडार और सुख, शांति एवं पवित्र जीवन होता है। अत: इन दो युगों में परमात्मा के आने की क्या आवश्यकता है? धर्म की हानि तो द्वापरयुग से शुरू होती है। तब यदि परमात्मा अवतरित होकर धर्म की स्थापना और अधर्म का विनाश कराए तो द्वापरयुग के बाद तो सतयुग आना चाहिए, लेकिन वास्तव में द्वापरयुग के बाद तो कलियुग आता है। इससे स्पष्ट है कि कलियुग के अंत में जब धर्म की अत्यंत हानि होती है। गीता में वर्णित धर्मग्लानि के चिन्ह से भी निम्न स्तर के कर्म करने लगता है और मनुष्य-मात्र आसुरी सम्प्रदाय के बन जाते हैं तब परमपिता परमात्मा शिव अपने वायदे अनुसार इस धरा पर अवतरित होते हैं। सहज राजयोग की शिक्षा देकर मानव को मुक्ति-जीवनमुक्ति का मार्ग बताते है।

### ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान परमात्मा का दिया

आज पूरे विश्व में लोग मूल्यों को किनारे रखकर जीवन और परिवार की बुनियाद रख रहे है। यही कारण है कि दिनोंदिन पूरे विश्व में अशांति और दु:ख के बादल है। हम परमात्मा शिव द्वारा बताए मार्ग का अनुसरण करें तो जीवन में एक अलग अनुभूति और शांति होगी। यही नई दुनिया निर्माण का सहज मार्ग प्रशस्त करेगा। ब्रह्माकुमारीज संस्था में सिखाया जाने वाला ज्ञान परमात्मा द्वारा बताया गया मार्ग है। निश्चित तौर पर इस मार्ग पर चलने से ही नई दुनिया बनेगी। इनका प्रयास जरूर सफल होगा। ऐसा मैंने खुद महसूस किया है। ये ज्ञान विश्वभर में घर-घर तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

**शोमा घोष,** सुप्रसिद्ध गायिका, मुंबई

### वह दिन दूर नहीं जब नई दुनिया बनेगी

मुझे माउण्ट आबू जाने का मौका मिला है। यह संस्था पूरे दुनिया को स्वच्छ और सुन्दर समाज बनाने में जुटी हुई है। यह केवल भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में बड़े रूप में काम कर रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि जिस तरह से यह विश्व में तेजी से बढ़ रही है वह दिन दूर नहीं जब नई दुनिया अवश्य बनेगी। इनका ज्ञान वसुधैव कुटुम्बकम की भावना वाला है। निश्चित तौर पर एक दिन पूरी दुनिया बेहतर दुनिया में बदल जाएगी। आज हमें एक परिवार को बचाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ संस्था पूरे विश्व को परिवार के रूप में बदलने के लिए कार्य कर रही है। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं कि अब नई दुनिया आ रही है। ये विद्यालय हमें जीवन में श्रेष्ठ नागरिक बनने की शिक्षा देता है।

**देबोजीत सहाय,** गायक एवं फर्स्ट विनर, सारेगामापा कन्टेस्ट, मुम्बई

## आध्यात्मिकता की सुगंध फैला रहा पीस पार्क

*ब्रह्माकुमारीज़ ने बीएमसी के अनुपयोगी गार्डन की इस तरह से बदल दी सूरत।*

कहते है यदि मन में शुभ संकल्प और दृढ़ इच्छाशक्ति हो तो कुछ भी असंभव नहीं। यह कर दिखाया है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय घाटकोपर सेवाकेंद्र के भाई-बहनों ने। वहां के भाई-बहनों ने बीएमसी से एक ऐसे गार्डन को गोद लिया जो पूरी तरह से अनुपयोगी एवं बदहाली का शिकार था। भाई-बहनों ने अपने अथक प्रयासों एवं लगन से इस गार्डन की सूरत ही बदल दी। इसे एक सुंदर गार्डन में परिवर्तन कर दिया और इसका नाम रखा पीस पार्क। अब यहां से निकली शांति की तरंगें आस-पास के वातावरण को शांति से भर देती है। यहां से लोग तन एवं मन दोनों की शांति लेकर जाते है। यहां से प्रेरणा लेकर अनेकों ने अपने जीवन की दिशा बदली है। यहां समय-समय पर एक्यूप्रेशर, स्ट्रेस मैनेजमेंट, मेडिटेशन, योगासन एवं प्रणायाम आदि कैंप लगाए जाते है।

*ब्रह्माकुमारीज़ को पार्क सौंपने से पहले बदहाली का शिकार पीस पार्क अपनी दुर्दशा की कहानी बयां करता हुआ।*

### यहां बताया जा रहा ज्ञान परमात्मा का है

वर्तमान में जो नकारात्मकता हैं उसको समाप्त करने में ब्रह्माकुमारीज संस्था महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यहां आकर मुझे अच्छा लगता है, क्योंकि मेरे प्रतिदिन की जिन्दगी में बहुत मदद मिलती है। यहां बताया जा रहा ज्ञान परमात्मा का ज्ञान है। यदि लोग इनकी बातों पर अमल करें, नई दुनिया की स्थापना में मददगार बने तो निश्चित तौर पर समाज में बदलाव आएगा। मैं तो बहुत प्रयास करती हूं कि अपनी जिन्दगी में इस ज्ञान को ज्यादा से ज्यादा अपनाऊं।

**दीपशिखा नागपाल,** फिल्म अभिनेत्री, मुम्बई

### नई दुनिया की हो रही स्थापना

आज चारों ओर निराशा का माहौल है। जब से वैज्ञानिक युग आया है, भौतिकता का युग आया है। जब आदमी आध्यात्मिकता से हटकर मैटेरियलिस्टिक की ओर जाता है तब वह संघर्ष करता है। जब इस दौड़ में सभी व्यक्ति सफल नहीं हो पाते तो उनमें निराशा का भाव आ जाता है। फिर वह अनेक समस्याओं से घिर जाता है। जीवन की शांति भंग हो जाती है। ऐसे समय मनुष्य को आध्यात्मिकता के द्वारा ही बदलाव आएगा। यह कार्य ब्रह्माकुमारीज़ संस्था द्वारा बखूबी हो रहा है। वहां का वातावरण, कार्यप्रणाली परमात्मा के निर्देशन में हो रही है। निश्चित तौर पर दुनिया की स्थापना हो रही है। नई दुनिया बनाने में ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य भूमिका है। बाकी संस्थाओं में समझने में वक्त लगता है। हर कोई समझ नहीं सकता। ब्रह्माकुमारीज़ की कार्यशैली और यहां की व्यवस्था पुरानी दुनिया को बदल रही है।

**डॉ. श्याम अग्रवाल,** अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष, वात्सल्य ग्राम्य, वृंदावन

### यह बिल्कुल अलग दुनिया है

ब्रह्माकुमारीज संस्था का नि:स्वार्थ प्रेम, जीवन जीने का महान लक्ष्य तथा वहां की शिक्षा श्रेष्ठ मनुष्य बनने के लिए जरूरी है। संस्थान की हर एक चीज मूल्यनिष्ठ देखकर मन बहुत प्रफुल्लित होता है। संस्थान में आने पर ऐसा महसूस होने लगता है कि यह दुनिया बिल्कुल अलग है। निश्चित तौर एक नई दुनिया का निर्माण हो रहा है। इसमें लोगों को भागीदार बनना चाहिए।

**अजय रात्रा,** पूर्व अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खिलाड़ी, फरीदाबाद

### जल्द ही बनेगी नई दुनिया

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था पूरी दुनिया में जो जीवन पद्धति लेकर चल रही है। वह अन्य जगह नहीं है। यहां आत्मा को स्वस्थ्य रखने की कला सिखाई जाती है। आज मनुष्य तनाव और विचारों के संघर्ष से त्रस्त है। मन के अंदर दु:ख, तनाव और अनेक प्रकार की बीमारियां आती है। इससे निजात पाने के लिए मेडिटेशन का निरंतर अभ्यास करना जरूरी है। इससे हमें मानसिक शांति और सुख की अनुभूति होती है। जिससे संबंधों में मधुरता आती है।

**डॉ. राम बारोट,** चेयरमैन, मुम्बई इम्प्रूवमेन्ट कमेटी, मुम्बई

### ब्रह्माकुमारीज़ अपने प्रयासों में सफल होगी

आज पूरे विश्व की दशा दिनोंदिन बिगड़ती जा रही है। कई प्रयासों के बाद भी किसी भी तरह का सुधार नहीं हो पा रहा है। स्वार्थ और लालच लोगों के ऊपर इतना हावी है कि सब कुछ मिटता जा रहा है। ऐसे में ब्रह्माकुमारी संस्था पूरे विश्व में जो मूल्यों को पुन: रोपित करने का कार्य कर रही है। वह सार्थक प्रयास है। ऐसे प्रयासों से ही विश्व को बचाया जा सकता है। मुझे पूरा विश्वास है कि एक दिन जरूर ये लोग अपने प्रयास में सफल होंगे और एक नई दुनिया होगी।

**स्वामी ब्रह्मदेव,** अध्यक्ष, ब्रह्मविद्यापीठ, त्रिनिडाड

### नि:स्वार्थ भाव से कर रहे समाज निर्माण का कार्य

मुझे माउण्ट आबू जाने का अवसर मिला। माउण्ट आबू से परमपिता परमात्मा शिव द्वारा नई दुनिया की पुन: स्थापना एवं समाज में मूल्यों के नवनिर्माण का जो दिव्य कार्य किया जा रहा है उसका कोई सानी नहीं है। मैं भाग्यशाली हूं जो मुझे शिव बाबा से मिलन मनाने एवं विराट रूप को देखने का अवसर मिला है। ब्रह्माकुमारीज संस्था नि:स्वार्थ भाव से समाज निर्माण का जो कार्य कर रही है वह बहुत ही सराहनीय है। हम सभी का दायित्व बनता है कि ऐसे विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बने। इस ज्ञान को विश्व के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने की आवश्यकता है। आध्यात्मिकता ही एकमात्र ऐसा उपाय है जिसमें मानव मन के विकारों को दूर किया जा सकता है।

**राजीव बियानी,** चेयरमैन, बियानी ग्रुप ऑफ गर्ल्स कॉलेज, जयपुर

### बिना ईश्वरीय शक्ति के यह कार्य संभव नहीं

आज व्यक्ति एक परिवार को नहीं संभाल पा रहा है। भाई-भाई, पति-पत्नी, बाप-बेटे में टकराहट होना आम बात हो गई है। वहीं ब्रह्माकुमारीज़ संस्था पूरे विश्व को एक परिवार बनाने के ध्येय को लेकर चल रही है यह कार्य बिना ईश्वरीय शक्ति के संभव नहीं है। जहां सरकार फैमिली प्लानिंग में फेल हो गई है, लेकिन ये संस्थान धर्म, मजहब, जातिभेद को भुलाकर विश्वभर के लोगों को भ्रातृत्व भाव में बांध रहा है यह अद्भुत कार्य है। ब्रह्माकुमारीज़ में जाने से मन को शांति मिलती है।

**एन.के. चंचवानी,** पूर्व मौसम विशेषज्ञ, मौसम केंद्र रायपुर, छग

### निश्चित ही श्रेष्ठ समाज की स्थापना होगी

आध्यात्मिकता से हमारे अंदर पॉजीटिव एनर्जी का विकास होता है और निगेटिव एनर्जी खत्म होती है। आध्यात्मिक होने से आध्यात्मिक स्वस्थ्य के द्वारा आम मानसिक स्वास्थ्य के लिए अध्यात्म के अलावा और कोई दूसरा मार्ग नहीं है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिए जा रहे ज्ञान से निश्चित ही श्रेष्ठ समाज की स्थापना होगी। ब्रेन में अल्फा, बीटा, थीटा, डेल्टा तरंगे होती हैं। जिनमें अध्यात्म के द्वारा परिवर्तन होता है और परमात्मा की शक्ति हमारे अंदर आती है। मैं अपने आप को भाग्यशाली समझता हूं कि मुझे परपपिता परमात्मा से मिलन मनाने का अवसर मिला। मेडीटेशन से मेरे जीवन में अनेक परिवर्तन आए।

**डॉ. रामबाबू,** पूर्व स्वास्थ्य निदेशक, उत्तर प्रदेश सरकार

# परमात्मा के निर्देशन में बन रही नई दुनिया

जी हां, यह सच है कि परमात्मा के निर्देशन में नई दुनिया बन रही है। भले ही एक बारगी आपको विश्वास न हो, लेकिन जिस तरीके से आज के समाज में मानव मूल्यों का तेजी से ग्राफ गिर रहा है। वहीं प्रकृति का असहयोगात्मक रूप, बारूदों के ढेर पर खड़ी यह दुनिया, मानव का रक्त रंजित खेल, इस चीज को बताने के लिए काफी है कि अब यह दुनिया बदलनी ही चाहिए। जाहिर सी बात है यह बनी-बनाई दुनिया भले ही पुरानी हो गई हो और विनाश के मुहाने पर खड़ी है। इस बदलाव के पूर्व नई दुनिया की स्थापना काल चक्र में निहित है। काल चक्र के अनुसार परमपिता परमात्मा शिव ने 77 वर्ष पूर्व नई दुनिया के नवनिर्माण का कार्य प्रारंभ किया जो आज भी जारी है और पूरा होने के करीब है। इसलिए समय की ट्रेन कहीं छूट न जाए....

### *समाज को नई दिशा दे रही ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान*

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा भारत सहित पूरे विश्व में जो कार्यक्रम चलाए जा रहे है उनका लक्ष्य आम जनमानस में श्रेष्ठ संस्कार, मानव मूल्यों के प्रति जागरूक करना है। मैं यहां माउण्ट आबू में आया और परमात्मा अवतरण हुआ उनका साक्षात्कार हुआ। सद्भाव पूर्ण व्यवहार करना यहां की विशेषता है। यहां का शांतिमय वातावरण बहुत अच्छा लगा। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जो भी कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, आम मानव में कल्याणकारी संस्कार पैदा करना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। इससे निश्चित एक दिन नई दुनिया बनेगी ऐसा मेरा विश्वास है। इस संस्था द्वारा समाज को एक नई दिशा दी जा रही है। लोगों का चरित्र निर्माण कर श्रेष्ठ समाज का निर्माण करना ही इस संस्था का उद्देश्य है।

**जस्टिस लालचन्द भांदू,** लोकायुक्त, छत्तीसगढ़

### *ब्रह्माकुमारीज़ से मेरी जिंदगी बदल गई*

फिल्मों की दुनिया की जिंदगी बिल्कुल अलग होती है, लेकिन आत्मा की सच्ची प्यास अधूरी रहती है। जब मैंने टीवी में ब्रह्माकुमारीज़ का कार्यक्रम देखा तब मुझे लगा कि इसमें कुछ सच्चाई जरूर है। जब ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में आया तो इससे धीरे-धीरे तस्वीर साफ होने लगी और आज हम एक अच्छी जिंदगी जी रहे हैं। इसके साथ ही ईश्वरीय सेवा में अपना जीवन सफल कर रहे है।

**सुरेश ओबेराय,** फिल्म अभिनेता, मुम्बई

### *नैतिक मूल्यों को पुन: स्थापित कर रही ब्रह्माकुमारीज़*

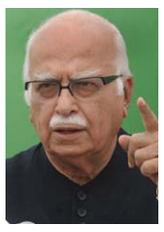

आज जब समाज में नैतिक हनन, भौतिकवादी सोच के कारण तेजी से चरित्र गिर रहा है। ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था पूरे विश्व में नैतिक मूल्यों को पुन:स्थापित करने का जो महान कार्य कर रही है वह सराहनीय है। भारत की अमूल्य धरोहर अध्यात्म के खजाने और स्वस्थ जीवन प्रणाली को प्रोत्साहित करने का कार्य प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय कर रहा है। ऐसे प्रयासों से ही स्वर्णिम दुनिया आएगी।

**लालकृष्ण आडवाणी,** वरिष्ठ भाजपा नेता, दिल्ली

### *बाबा नई दुनिया बना रहा*

शिव बाबा नई दुनिया बना रहे हैं इसमें कोई शक नहीं है। शिव बाबा जो ज्ञान दे रहे हैं, उससे लोगों के जीवन में जो बदलाव आ रहा है वह आश्चर्य जनक है। तभी आज पूरे विश्व में हर प्रकार के लोग और अनेक सोच वाले लोग भी इस अभियान का हिस्सा है। परमात्मा के निर्देशन में जरूर यह दुनिया बदलेगी और लोग खुश होंगे।

**ब्रह्माकुमारी शिवानी,** वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, गुड़गांव

### *निश्चित ही नया समाज बनेगा*

यह संस्था समाज में अच्छा कार्य कर रही है। समाज में बुराइयों से रोकती है। पीड़ित लोगों को निजात दिलाने में यहां का ज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। आज समाज में जो कुरीतियां है उनसे अच्छे समाज की कल्पना नहीं की जा सकती, लेकिन ब्रह्माकुमारीज़ संस्था जो समाज बदलाव का कार्य कर रही है उससे निश्चित ही नया समाज बनेगा। परमात्मा का ज्ञान ही हमारे जीवन और समाज को बदलने के लिए उपयोगी होगा।

**असलम शेख,** कांग्रेस विधायक, मलाड, मुम्बई

### *समाज श्रेष्ठता की ओर अग्रसर हो रहा*

आज के युग में जहां महिलाओं के अधिकारों को लेकर चर्चा हो रही है। वहीं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में बहनें जिस तरह से समाज बदलाव का कार्य कर रही है। यह अपने आप में अनोखा और अचरज भरा है। जिन मान्यताओं के साथ कार्य हो रहा है उससे परिवार और समाज श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होगा। यहां की व्यवस्था देखने के बाद मन में कोई शक नहीं रह जाता कि नयी दुनिया नहीं बनेगी। इसमें सभी को सहयोग करना चाहिए।

**आर. के. उपाध्याय,** मुख्य प्रबंध निदेशक, भारत संचार निगम लिमिटेड, दिल्ली

### *माउण्ट आबू वाकई एक नई दुनिया है*

जिस तरह से इस संस्था की सोच है, जैसा यह प्रयास है वह सराहनीय है। ब्रह्माकुमारीज़ के जितने भी अथक प्रयास चल रहे है वह समाज को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। माउण्ट आबू में जाने से महसूस होता है कि वाकई हम एक नई दुनिया में है। वर्तमान समय में मूल्यों से सुसज्जित सुन्दर परिपूर्ण माहौल वास्तव में परमात्मा द्वारा बनाई जा रही नई दुनिया का उदाहरण है। निश्चित तौर पर इससे नया समाज बनेगा।

**सुनील यादव,** सहायक उपाध्यक्ष, होण्डा सीएल, दिल्ली

मुझे इस संस्थान को करीब से देखने अवसर मिला। यहां आकर मुझे मालूम हुआ कि आज के युग में इतना महान कार्य किसके सान्निध्य में हो रहा है। सचमुच परमात्मा का कार्य सर्व मानवजाति के लिए कल्याणकारी है। इस संस्थान में आने के बाद पूरी तरह एहसास होने लगता है। यहां आने के बाद पूरी तरह तस्वीर साफ हो जाती हैं। निश्चित तौर पर नई दुनिया का निर्माण हो रहा है। जहां बुराइयों और अपराधों के लिए कोई स्थान नहीं होगा।

**प्रकाश केडिया,** प्रबंध निदेशक, स्टील प्लांट, रायपुर

नई दुनिया के नवनिर्माण की नींव परमपिता परमात्मा शिव ने सन् 1937 में ही प्रजापिता ब्रहा के साकार माध्यम द्वारा रख दी थी। तब से लेकर आज तक परमात्मा का यह दिव्य कार्य अनवरत जारी है। प्रारम्भ में ही ब्रह्मा बाबा को नई दुनिया का साक्षात्कार हो गया था।

### कैसे चल रहा रहा परिवर्तन का कार्य

बिन पग चले सुनै बिन काना, कर्म करहुं, केहि विधि नाना। बात सन् 1936 की है। हीरों जवाहरातों के प्रसिद्ध व्यापारी दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे कि उन्हें रात्रि के समय अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। दादा दुनिया के विनाशकारी रूप को देख गये और मन ही मन परमात्मा से कहने लगे कि हे! परमात्मा मुझसे अब यह नहीं देखा जाता। उसके तत्पश्चात ही नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ।

दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आई। फिर जब वे अपने घर पहुंचे और एक दिन अपने कमरे में बैठे थे तब उनके अंदर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया तथा स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय दिया। इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यहीं से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के दुनिया बदलाव का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

परमात्मा के निर्देशानुसार सन् 1937 में हैदराबाद सिंध (जो अभी पाकिस्तान में है) दादा लेखराज ने अपना सारा व्यापार अपने मित्र को सौंपकर मुठ्टी भर भाई-बहनों के साथ ओम् मंडली नाम से संस्था की शुरूआत की। क्योंकि परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की जरूरत थी जिससे लोगों को यह एहसास हो सके कि यह कोई साधारण लोग नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेना है। उस दौरान चूंकि परमात्मा को भारत और वन्देमातरम् की गाथा को चरितार्थ करना था। इसलिए माताओं बहनों के सिर पर ही ज्ञान का कलश रखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया। आज एक विशाल वट वृक्ष का रूप ले चुका है।

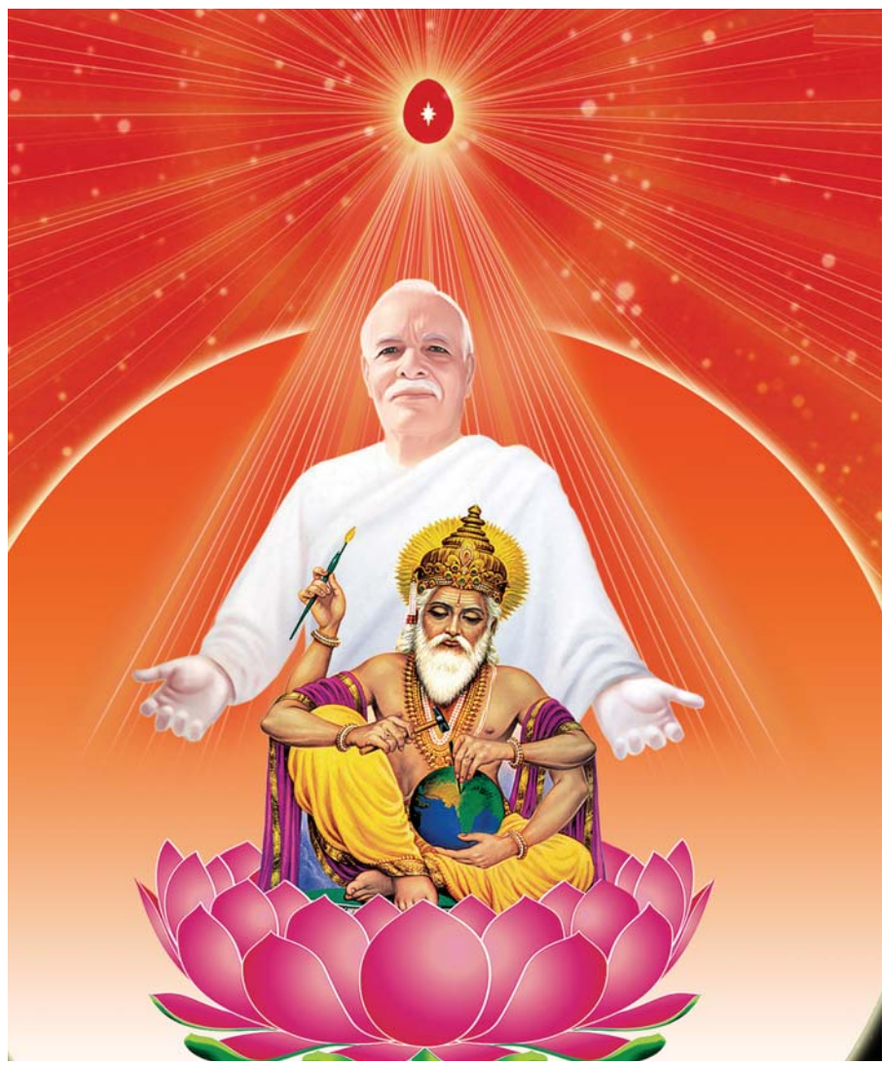

*परमपिता परमात्मा शिव ब्रहा तन का आधार लेकर नई दुनिया का कर रहे निवनिर्माण।*

### समूल विनाश की तैयारी

आज यह चर्चा जोर पकड़ने लगी है कि अब दुनिया का विनाश निकट है। चाहे वह माया कैलेंडर की भविष्यवाणी हो या नास्त्रेदामस की या फिर पर्यावरणविदों की। इसके स्पष्ट लक्षण महसूस होने लगे है। जहां एक ओर मानव उत्थान की अनंत संभावनाएं है, वहीं दूसरी ओर उसके समूल विनाश की पूरी तैयारी है। विज्ञान- तकनीकी प्रगति दूषित मस्तिष्क वाले मानवों के हाथ का खिलौना बनी हुई है। उसने मानव को ऐसे बारूद की ढेर पर ला खड़ा किया है, जिसमें किसी भी समय विस्फोट हो सकता है।

### *मनुष्य को स्वयं अर्थात् आत्मा का ज्ञान होना जरूरी*

ब्रह्माकुमारीज़ की फिलासफी में मुझे पूरा विश्वास है। क्योंकि यहां ज्ञान देने का तरीका सरल एवं तार्किक है। प्रत्येक मनुष्य के लिए स्वयं का ज्ञान अर्थात् आत्मा का ज्ञान होना जरूरी है। जब तक हम स्वयं को नहीं समझेंगे तब तक परमात्मा को नहीं समझ सकते है। इसी संस्था के द्वारा सभ्य समाज की स्थापना हो सकती है क्योंकि इनके द्वारा जो मूल्यों की शिक्षा दी जाती है वह अन्य संस्थाओं में देखने को नहीं मिलती हैं। ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षा से व्यक्ति में मूल्यों का विकास एवं श्रेष्ठ कर्म की भावना जागृत होती है। यहां से सभ्य समाज की स्थापना हो सकती है।

**डॉ. ज्योति शंकरसिंह,** एसो. प्रोफेसर, गोविंद सिंह कॉलेज, पटना

## ...तो धरती पर सतयुग कौन लाएगा?

इस प्रकार, जब कलियुग का अंत आता है, तब सतयुग की पुन: स्थापना के लिए मनुष्य को फिर से देवता बनाने के लिए, अधर्म का विनाश और सत् धर्म की पुन: स्थापना के लिए और संसार को दु:खी से सुखी करने के लिए परमात्मा को अपना कर्त्तव्य करना पड़ता है क्योंकि तब वही एक आत्मा रह जाती है जो कि पतित नहीं होती और स्वरूप-विस्मृति तथा दु:ख को प्राप्त नहीं होती।

अगर परमात्मा इस समय कर्त्तव्य न करे तो कलियुग का अंत करके सतयुग कौन लायेगा, मनुष्य को देवता कौन बनायेगा, धर्म की बेल कौन लगायेगा और विश्व में फिर से सुख और शांति की स्थापना कैसे होगी? क्या कोई कलियुगी मनुष्य चाहे वह विद्वान या कर्म-संन्यासी ही क्यों न हो, दूसरों को सतयुगी अथवा देवता बना सकता है? नहीं, विकारी मनुष्य को देवता बनाने वाला तो देवों से भी महान अर्थात परमात्मा ही हैं, जिसे पतित पावन अथवा देवों का भी देव कहा गया है।

## क्या है... मनुष्य जीवन का लक्ष्य!

मनुष्य का वर्तमान जीवन बड़ा अनमोल है, क्योंकि इस संगमयुग में ही वह सर्वोत्तम पुरुषार्थ करके जन्म-जन्मान्तर के लिए सर्वोत्तम प्रारब्ध बना सकता है और अतुल्य हीरों-तुल्य कमाई कर सकता है।

वह इसी जन्म में सृष्टि का मालिक अथवा जगतजीत बनने का पुरुषार्थ कर सकता है। परंतु, आज मनुष्य को जीवन का लक्ष्य मालूम न होने के कारण वह सर्वोत्तम पुरुषार्थ करने की बजाय इसे विषय-विकारों में गंवा रहा है अथवा अल्पकाल की प्राप्ति में ही लगा है। आज वह लौकिक शिक्षा द्वारा वकील, डॉक्टर, इंजीनियर बनने का पुरुषार्थ कर रहा है और कोई तो राजनीति में भाग लेकर देश का नेता, मंत्री अथवा प्रधानमंत्री बनने के प्रयत्न में लगा हुआ है।

कुछ लोग इन सभी चीजों का सन्यास करने के लिए संन्यासी बनकर रहना चाहता है। परन्तु सभी जानते हैं कि मृत्युलोक में तो राजा-रानी, नेता, वकील, इंजीनियर, डॉक्टर, संन्यासी इत्यादि कोई भी पूर्ण सुखी नहीं है। अत. इनकी प्राप्ति से मनुष्य जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती, क्योंकि मनुष्य तो सम्पूर्ण-पवित्रता, सदा सुख और स्थायी शांति चाहता है। इस लक्ष्य की प्राप्ति कोई मनुष्य अर्थात् कोई साधु - संन्यासी, गुरु या जगद्गुरु नहीं करा सकता बल्कि यह दो ताजों वाला देव-पद अथवा राजा-रानी पद तो ज्ञान के सागर परमपिता परमात्मा शिव ही से प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग के अभ्यास से प्राप्त होता है।

## कैसा होगा सतयुग का समाज?

स्वर्णिम युग में एक आदर्श समाज व्यवस्था होती है। जिसमें आध्यात्मिक, भौतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, वाणिज्यिक, शैक्षणिक, नैतिक, सामाजिक तथा शरीरिक संबंधों की व्यवस्था सतोप्रधान रूप में होती है। मनुष्यों का आपसी व्यवहार सम्पूर्ण नैतिक मूल्यों के आधार पर ही चलता है। और समाज दैवी गुण सम्पन्न और सुखी होता है। वहां के श्रेष्ठ भाग्यवान आत्माओं को दरबार का संन्यास नहीं करना पड़ता क्योंकि उनके आपसी संबंधों में मोह या वासना रूपी कामना नहीं होती। वहां हर व्यक्ति सचरित्रवान होता है। इसलिए उनके व्यक्तित्व के बीच कभी टकराव नहीं होता है। ना ही कभी धन सम्पत्ति के वजह से झगड़ा, फसाद या धोखाबाजी होती है। वहां हर कोई राजा हो या प्रजा हो सब प्रमाणिक, प्रेम पूर्ण स्वभाव और सत् चरित्र के होते हैं। वहां कोई भी व्यवसाय वहां के ताल-मेल को नहीं बिगाड़ता है। हर कोई को राज्य में योग्य भूमिका निभाने को मिलती है। वहां ईर्ष्या, द्वेष या मतों की भिन्नता कभी नहीं होती है। क्योंकि वहां हर कोई को समान रूप से संतोष होता है। हर एक को उनके गुणों के अनुसार समाज में स्थान मिलता है। मानों जैसे हीरों को उसकी चमक रंग और योग्यता अनुसार किसी कलाकृति पर अलग-अलग स्थान पर लगाया जाता है। वहां सभी अच्छे से अच्छी सुखदायी सम्पन्न परिवार हैं। अनेक मर्तबे होते हुए भी परिवार के रूप में चलता है। वहां रॉयल परिवार का पद भी इतना होता है जितना तख्तनशीन महाराजा महारानी का होता है। उनका भी पद और रिगार्ड इतना ही होगा जितना महाराजा महारानी का होगा। वहां परिवार के सब सम्बन्ध में खुश मिजाज, सुखी परिवार, समर्थ परिवार, जो भी श्रेष्ठताएं हैं, वह सब हैं। वहां सर्व प्रकार के साधन या सुविधा होते हुए भी उनसे प्राप्त संबंध और सुख में सदा संतोष रहता है।

### *यह संस्था बुराइयों का सन्यास कराती है*

सादा जीवन और उच्च विचार के साथ यह संस्था जो कार्य कर रही है वह आज के समय के लिए बहुत जरूरी है। यह संस्था कभी भी संन्यास करने के लिए नहीं कहती बल्कि बुराइयों का सन्यास कराती है। इस ज्ञान और पद्धति को यदि लोग अपनाए तो जल्दी ही यह भारत स्वर्ग बन जाएगा। इसमें कोई दो राय नहीं।

**रमेश अग्रवाल,** प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं अध्यक्ष, छत्तीसगढ़, व्यापार संघ

### *एक दिन जरूर बनेगी नई दुनिया*

मुझे सन् 1991 में ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान के बारे में मालूम चला। मैं इस ज्ञान से पूरी तरह संतुष्ट हूं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था का ज्ञान बिल्कुल नया और सैद्धांतिक है। इसमें भ्रम एवं संशय की कोई बात नहीं है। ब्रह्माकुमारीज़ जो नई दुनिया के निर्माण एवं स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का नारा लेकर चल रही हैं वह एक दिन अपने मकसद में जरूर सफल होगी। एक दिन जरूर इस धरती पर नई दुनिया बनेगी ऐसा मुझे विश्वास है। यहां का ज्ञान पूरी तरह से स्पष्ट एवं तार्किक है। परमात्मा का इस धरा पर अवतरण हो चुका है और वह नई दुनिया के निर्माण का कार्य कर रहे है। मेरे मन में जब कोई द्वंद या तनाव होता है तो मैं शिव बाबा को याद करके ईश्वरीय महावाक्य सुनती हूं तो मेरे सवालों का जवाब मुझे मिल जाता है और मेरा मन बिल्कुल शांत हो जाता है। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है।

**कु. शारदा राठौर,** मुख्य संसदीय सचिव, हरियाणा सरकार

### *यहां के ज्ञान पर मुझे पूर्ण विश्वास है*

मैं ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा दिए जा रहे ज्ञान से 100 प्रतिशत संतुष्ट हूं। दस घंटे के सफर में हमें 18 घंटे समय लगा, लेकिन इस दौरान मैं तनावमुक्त रहा। मन की शांति की शुरुआत करने का मुझे यहां अवसर मिला। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा ही एक श्रेष्ठ समाज की स्थापना हो सकती है। मुझे शिवानी बहन के इंटरव्यू से प्रेरणा मिली। यहां के सिद्धांत और ज्ञान पर मुझे पूर्ण विश्वास है। नई समाज की स्थापना होनी ही चाहिए, क्योंकि वर्तमान समय कोई भी खुश नहीं है और अपना जीवन तनाव में व्यतीत कर रहे हैं। यह समाज बदलकर शांतिमय दुनिया जल्द ही आनी चाहिए। जिससे लोग खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकें। यदि तनाव की जिंदगी से बाहर आना है, मन की शांति चाहिए तो आप ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़े और अपने परिवार को खुशहाल बनाएं।

**अरुण कुमार वर्णवाल,** सहायक आयुक्त, वाणिज्य कर , नवादा, बिहार

### *दुनिया को बचाने का आध्यात्मिकता ही विकल्प*

अगर दुनिया को बचाना है, आगे बढ़ाना है तो इस आध्यात्मिक ज्ञान के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। जिस तरह से आज लोग दु:खी, परेशान, तनावग्रस्त, अनेक बीमारियों से जूझ रहे हैं, आत्महत्याएं कर रहे हैं। उससे बचने का एकमात्र तरीका यह संस्था बता रही है। इससे न केवल जीवन जीने का तरीका आता है, बल्कि पूरी जिंदगी बदल जाती है। जब इंसान सच्चाई के रास्ते, चलते हुए अध्यात्म के जरिए ध्यान प्रक्रिया से परमात्मा को याद करते हैं तो माइंड में न्यूरोन और हार्मोन की कार्य करने की क्षमता तीन गुना बढ़ जाती है। इसलिए इस ज्ञान को सभी को तो लेना ही चाहिए बल्कि बच्चों के लिए अति आवश्यक हो गया है। इससे बच्चों में एक नए संस्कार का विकास होगा और नई दुनिया बनेगी।

**बिस्वरूप रॉय चौधरी,** मेमोरी रिकॉर्ड होल्डर, गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड, दिल्ली

### पीस ऑफ माइंड चैनल ईश्वरीय उपहार

'पीस ऑफ माइंड' दुनिया का एकमात्र ऐसा चैनल है, जिसमें विज्ञापन नहीं है। सभी को ईश्वरीय निमंत्रण और परमात्मा का सत्य परिचय मिले। इसके लिए विज्ञान के साधनों का अहम योगदान है। जिसमें सिर्फ ईश्वरीय संदेश प्रचारित एवं प्रसारित होता है। आज इस चैनल से जुड़कर लाखों लोगों ने अपने जीवन को नई दिशा दी है। कई लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव आए है। आधुनिक युग में आज चैनलों में जहां अश्लीलता, फूहड़ता परोसी जा रही हैं वहीं पीस ऑफ माइंड चैनल लोगों के जीवन में आशा की एक नई किरण बनकर सामने आया है। इस चैलन के द्वारा भारतवर्ष में सकारात्मक चिंतन, मेडिटेशन एवं वरिष्ठ राजयोगी भाई-बहनों के माध्यम से लोगों के आम जीवन से जुड़ी समस्याओं का समाधान किया जा रहा है। जिसे वीडियोकान, रिलायंस डीटीएच के अलावा केबल पर कहीं भी देखा जा सकता है।

**अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें मो... 8140211111, 7891109999, ईमेल:** karunabk@gmail.com

### ईश्वरीय संदेश

निरंतर सम्पूर्ण सुख, शांति, सम्पत्ति और आरोग्य की कामना मानवीय मन में सदा से ही बनी रही है। इच्छाएं तो सबकी है परंतु सम्पूर्ण प्राप्ति न होने के कारण अक्सर यह सवाल सभी के मन में उठता है कि क्या कभी ऐसा समय था जब सर्व प्राप्तियों से सभी मानव भरपूर थे? क्या ऐसी स्वर्णिम दुनिया या सुखमय संसार वास्तविकता में थी या मानवीय मन की कल्पना? यह इतिहास की सच्चाई थी या दंतकथाओं की कल्पना? जितनी ही गहराई में इस बात पर विचार किया जाता है या इतिहास विज्ञान और धर्मशास्त्रों का अध्ययन किया जाता है तो यह स्वर्णिम सुखमय संसार केवल कल्पना नहीं, किन्तु सत्यता और वास्तविकता थी इसकी पुष्टि होती है। वर्तमान समय में सर्व मनुष्य आत्माओं के पिता परमात्मा शिव दु:खों से छुड़ाकर नई दुनिया में ले जाने का ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे है। जिससे मनुष्य का भविष्य तो उज्जवल होगा ही वर्तमान भी ईश्वरीय छत्रछाया में सुरक्षित और खुशहाल होगा। यही ईश्वरीय संदेश है।

**स्थानीय सेवाकेद का पता:**

**प्रकाशक:** ब्रह्माकुमार करुणा द्वारा मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन विभाग ब्रह्माकुमारीज़ के लिए प्रकाशित एवं डीबी प्रिंट साल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें: मोबाइल 9413384884, 9414156615, 9414193999 फोन: 02974-228230, **Email: bkmediaprhq@gmail.com**